कथा क्रम

जनवरी–मार्च, 2025

मूल्य – ₹ 60

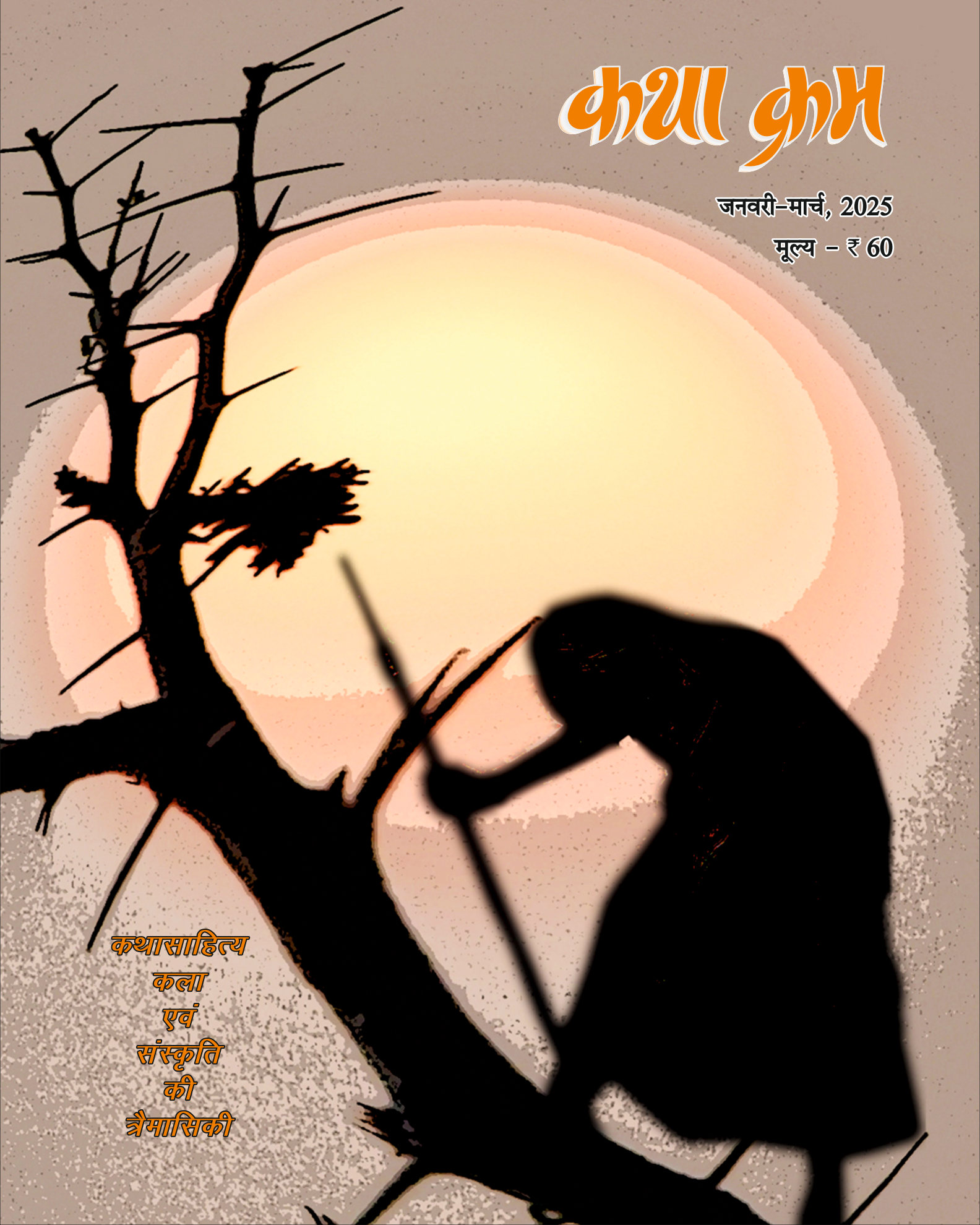

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

ISSN-2231-2161

वर्ष : 27 अंक : 103

जनवरी-मार्च 2025

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

10 **नवनीत मिश्र** : बेस्ट हाफ
14 **सुषमा मुनीन्द्र** : उन्मेष
21 **वंदना शुक्ला** : डर
25 **श्यामल बिहारी महतो** : ढुकनी
31 **डॉ. रंजना जायसवाल** : साबुत बचा न कोए....
52 **चंद्रिका चौधरी** : क्षितिज तक जाती नज़रें
58 **गुलाम गौश अंसारी** : खुदा का घर
63 **चित्रा पंवार** : 'आई एम सिक्स ईयर ओल्ड'
68 **रेमन** : चौरस्ता
अनुवाद : अमरीक सिंह दीप
71 **साई ब्रह्मानंदम गोर्ती** : क्विल्ट
अनुवाद : डॉ. वी.एल.नरसिंहम शिवकोटी

लघुकथाएं

13 **गोविन्द भारद्वाज** : मां की चिंता
70 **महेश कुमार केशरी** : बिल्ली
77 **महेश कुमार केशरी** : कैलेंडर

प्रसंगवश

06 **चित्रा मुद्गल** : इस तरह भी

लेख

35 **देवेन्द्र** : उजड़ते गांवों की दास्तान : अगम बहै दरियाव
44 **धनेश दत्त पाण्डेय** : 'ज्यों की त्यों धर धीनी चदरिया' उर्फ 'तोता-मैना की कहानी'

कविताएं

78 **हरे प्रकाश उपाध्याय** : बहुत काम है, खेत का एतवारू
79 **गोलेन्द्र पटेल** : अपूर्णता, तीसरा समाज
80 **बन्धु पुष्कर** : मेरे शहर के लड़के कभी पतंगबाज नहीं रहे, प्रेम का अनुवाद नहीं होता
81 **अभिषेक कुमार सिंह** : ईश्वर के आंसू
82 **शिव कुशवाहा** : बारिश की बूंदों का राग, दुनिया के अबोले बच्चे, बचे रहेंगे शब्द

कथा-शोध

84 **राहुल कुमार यादव** : जाति और पितृसत्ता के आईने में भारतीय मुस्लिम समाज : संदर्भ 'कुठांव'

कथाक्रम-2024 व्याख्यान

90 **कंवल भारती** : सत्ता, संस्थाएं और साहित्य

समीक्षाएं

93 **अंकित नरवाल** : पहाड़ सरीखा दुख (उपन्यास : एस.आर. हरनोट)
95 **रामनाथ शिवेंद्र** : औपन्यासिक परंपरा से अलग नए तरह का उपन्यास 'निर्बीज' (उपन्यास : विनोद शाही)
98 **किरण अग्रवाल** : सूखे पत्तों के रंग (कथा डायरी : जाबिर हुसैन)
100 **प्रो. चंद्रभान सिंह यादव** : स्त्री-विमर्श की कहानियां (कहानी संग्रह : लालसा यादव)
102 **डॉ. प्रदीप उपाध्याय** : मानव चेतना को झकझोरता और आत्म साक्षात्कार कराता व्यंग्य संग्रह (व्यंग्य संग्रह : धर्मपाल महेन्द्र जैन)
2 **सम्पादकीय** : सदी का विशिष्ट आयोजन-महाकुंभ : कुछ विचार

आवरण : **बंसीलाल परमार**
रेखाचित्र : **संदीप राशिनकर**

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 60 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-900 ₹, आजीवन 4000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-400 ₹, त्रैवार्षिक-1100 ₹, आजीवन 5000 ₹

(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

सदी का विशिष्ट आयोजन–महाकुंभ : कुछ विचार

सदी का सबसे विराट, विशाल, भव्य, दिव्य और आध्यात्मिक आयोजन 'महाकुंभ-2025' सकुशल सम्पन्न हो गया। संभव है कुछ पाठक 29 जनवरी की भगदड़, जिसमें सरकारी आकड़ों के अनुसार 30 श्रद्धालु कालकवलित और कई सौ लोग हताहत हुए, का संज्ञान लेते हुए 'सकुशल' शब्द पर आपत्ति करें। पर एक सजग नागरिक और पूर्व पुलिस अधिकारी के तौर पर मैं पूरी जिम्मेवारी से इस महा आयोजन की व्यवस्था को सकुशल कह रहा हूं। जहां लगातार डेढ़ माह तक करोड़ों की संख्या में रात दिन श्रद्धालुओं की आमद बनी हो और उनकी अनेकानेक गतिविधियां हों, वहां एक अपवाद को छोड़ कर लोगों की ठेलमपेल, अक्षुण्ण रेले दर रेले, एक दूसरे पर चढ़ते लोगों की सुरक्षित व्यवस्था सुनिश्चित करना अत्यंत गंभीर, गुरुत्तर और महती चुनौती है जिसका अहसास शायद आम आदमी को नहीं हो सकता। भीड़ भी विविध प्रकार, प्रकृति और प्रवृति की जिसमें विचित्र रूपरंग, पहनावा या केश सज्जा धारण किए लिपे-पुते, नंग-धड़ंग, महामंडलेश्वर/साधु/संत, हाथों में तलवार, लाठी, त्रिशूल, फरसे, कभी मशाल लहराते हुए, भक्ति भाव में आकंठ डूबे, दीन दुनिया से बेखबर उनके शिष्य, अखाड़ों के भव्य जुलुस जिसमें साधु-संतों के साथ हाथी, घोड़े, रथ, छोटे बड़े वाहन, भजन कीर्तन नृत्य और साथ चल रहे उनके असंख्य अनुयायी.... । कभी उनका रूप व गतिविधियां भय का संचार भी करतीं। कुछ परिवार अपने छोटे बच्चों को इस मंजर से दूर रखते जिससे वे डर की किसी ग्रंथि से ग्रस्त न हो जाएं। विभिन्न मान्यताओं, परम्पराओं व विश्वास वाले श्रद्धालुओं के चेहरों पर आस्था का आलोक, संतोष का अपूर्व सुख... । कहीं परिवार के समस्त सदस्य रस्सी से दूसरे को बांधे हुए, गोदी शिशुओं से लेकर कंधे, कमर और व्हील चेयर में सवार वृद्धजन, विकलांग आदि। कुछ अटूट धार्मिक भावना से ओतप्रोत आस्था का आनंद उठाते तो कोई अपने बुजुर्ग परिजनों की खातिर यह जहमत उठा रहे थे। कुछ तफरीह और मेले का लुत्फ उठाने आए थे तो कुछ अथाह जनसमूह के सैलाब को देखने और लगे हाथ संगम में डुबकी लगा कर पुण्य अर्जित करने की आकांक्षा लिए थे। राष्ट्रपति से लेकर प्रधान मंत्री समेत सभी प्रमुख मंत्रियों, राजनीतिक पदाधिकारियों, तमाम राज्यों के मुख्य मंत्रियों/राज्यपालों, देश के जाने माने उद्योगपतियों, शख्सियतों, सिनेमा/टीवी के कलाकारों आदि के कुंभ आगमन ने आम आदमी के अंदर इसके लिए अभूतपूर्व आकर्षण पैदा कर दिया था। रही सही कसर कुछ प्रख्यात विदेशी महानुभावों ने पूरी कर दी जिनके कुंभ प्रवास के अनुभव टीवी पर खूब प्रचारित किए गए। कुछ बेहद चर्चित चेहरे- सस्ते हार/रुद्राक्ष की मालाएं बेचती हिरनी जैसी आंखों वाली मोनालिसा जिसपर फिल्मकारों की नजर पड़ी और वह धूलधूसरित जीवन से सैल्यूलाइड व सोशल मीडिया के पंचरंगी माहौल में अंतरित हो गई, आईआईटी पास बाबा, सन्यासिन रूप धारण किए सुंदर मॉडल्स और बीते दिनों की सुपरिचित अभिनेत्री ममता कुलकर्णी सरीखे अनेक चरित्र जो लोगों के आकर्षण का केंद्र बने थे। नतीजतन बाद के दिनों में तो उत्तर प्रदेश ही नहीं, दिल्ली व पड़ोस के राज्यों के निवासियों में महाकुंभ में जाने और संगम स्नान करने के लिए एक होड़ सी लग गई थी। 15, 20 किलोमीटर पैदल चलने, पेयजल या खाने-पीने की किल्लत, संगम के